''जैन संस्कृति की अमूल्य धरोहर : तुलसी कला प्रेक्षा''

''युनान मिश्र रोमां सब मिट गए जहां से
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी''

मौहम्मद इकबाल की उपरोक्त पंक्तियां भारतीय संस्कृति की कालजयिता को प्रदर्-ित करती है। वि-व रंगमंच पर अनेक संस्कृतियों का उद्भव हुआ किन्तु अपने सिद्धान्तों और अवधारणाओं के कारण वे सभी समय के साथ विलीन होती चली गई। इस संदर्भ में भारतीय संस्कृति पर दृश्टिपात करें तो यह स्पश्ट होता है कि भारतीय संस्कृति अपने उच्च आद-र्ों एवम् मूल्यों के कारण आज भी अपना अस्तित्व यथावत् बनायें हुये है। भारत के विभिन्न प्रांतों ने अपनी कला, साहित्य और संस्कृति को जीवंतता प्रदान की है और ऐसा ही एक प्रान्त है - राजस्थान। राजस्थान की कला, साहित्य, संस्कृति और परंपरा के अनगिनत रंगों की छटा ने इस प्रदे-ा को दे-ा विदे-ा में 'रंगीले राजस्थान' के नाम से प्रसिद्धि दिलवायी है। इस प्रान्त की विभिन्न कला ैलियां यथा - मेवाड़ ैली, मारवाड़ ैली, ढुंढ़ाड़ ैली, बुंदी ैली एवम् कि-ानगढ़ ैली आदि ने कला के क्षेत्र में राजस्थान की एक वि-िश्ट पहचान बनायी है।

राजस्थान की सुप्रसिद्ध कला का परिचय देने वाला स्थल है - नागौर जिले का लाडनूं कस्बा। लाडनूं का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृश्टि से तो महत्व है ही किन्तु पुरातत्व, मूर्तिकला, चित्रकला एवं वि-व प्रसिद्ध जैन धर्म की कला और संस्कृति की दृश्टि से यह स्थान उल्लेखनीय है। जैन धर्म के तेरापंथ सम्प्रदाय की वि-िश्ट कला और संस्कृति को सजीवता प्रदान करने वाला एक वि-िश्ट केन्द्र है - तुलसी कला प्रेक्षा।

तेरापंथ धर्मसंघ के नवम् आचार्य, आचार्य श्री तुलसी की जन्म स्थली, लाडनूं में एक वि-व प्रसिद्ध संस्थान ''जैन वि-व भारती'' अवस्थित है। आचार्य तुलसी की पावन प्रेरणा से इस संस्था की स्थापना ि-क्षा, ोध, साहित्य, सेवा, साधना और समन्वय के सप्तसूत्री कार्यक्रमों की गतिविधियों के संचालन हेतु 1970 में की गयी थी। जैन वि-व भारती का संपूर्ण परिसर असीम ान्ति और परम आनन्द की अनुभूति कराता है। क्योंकि इस परिसर का कण कण अध्यात्म की सुगन्ध से सुगन्धित है एवं प्रकृति की नैसर्गिक हरितिमा से सुसज्जित है। जैन वि-वभारती के द-र्नीय स्थलों यथा - वर्धमान ग्रन्थागार, तुलसी अध्यात्म नीडम, सुधर्मा सभा, आरोग्यम् तुलसी स्मारक,

निर्माणाधीन डोम, आदि में तुलसी कला दीर्घा का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। तेरापन्थ धर्म संघ की अर्वाचीन संस्कृति, प्राचीन विरासत, अमूल्य धरोहर एवं बहुमूल्य कृतियों को देखने की यह अद्‌भुत संगम स्थली है। इस कला प्रेक्षा में तेरापंथ सम्प्रदाय के साधु-साध्वियों क विलक्षण हस्तकला, चित्रकला, हस्तलेख, सूक्ष्माक्षर लिपी कला एवं विभिन्न कलाकारों की कलाकृतियों को सुरक्षित रखा गया है।

कला प्रेक्षा के काश्ठ निर्मित प्रवे-ा द्वार पर उत्कीर्ण बारीक कारीगरी बेजोड़ है। द्वार पर उत्कीर्ण तीर्थकर के चित्र, अश्टमंगल के चिन्ह आदि कला दीर्घा की कलात्मकता का परिचय करवाना प्रारंभ कर देते है। तुलसी कला प्रेक्षा में प्रवे-ा करते ही आचार्य तुलसी की एक चिर परिचित मुद्रा की ऐसी जीवंत तस्वीर है जिससे आने वाले हर द-र्ाक को यह आभास होता है कि गुरूदेव के आ-ीर्वाद भरे हाथ और करूणा की अपार दृश्टि उन पर बरस रही हो। इसके पश्चात् कला केन्द्र में विभिन्न कलाओं का प्रद-र्ान प्रारंभ हो जाता है।

कला के क्षेत्र में चित्रकला का अपना वि-िश्ट स्थान हैं। चित्रकला में रेखाचित्र, रंग, आकार आदि का सामंजस्य चित्रों को सजीवता प्रदान करते हैं। कला दीर्घा में जैन तीर्थकर भगवान ऋशभ, अरिश्टनेमि, पा-र्वनाथ और महावीर के जीवन द-र्ान को द-र्ाने वाले चित्रों में चित्रकला की विद्या का अनुठापन देखने को मिलता है। इन चित्रों को देखकर ऐसा लगता है मानों चित्रों की जीवंतता स्वयं अपनी कहानी कह रही हो। चित्रों की श्रृंखला में अनासक्ति, संयम और निःस्वार्थ भाव का संदे-ा देने वाले रंगीन चित्र -िक्षाप्रद है। जैन मुनियों द्वारा निर्मित होने के कारण इन चित्रों में आध्यात्मिकता और धार्मिकता का पुट स्पश्ट दृश्टिगोचर होता है। इसके साथ ही जहां एक ओर देवलोक की विलास क्रीड़ा, नृत्य-संगीत, भवन, रंग-ाला आदि के आकर्शक चित्र हैं तो वही दूसरी ओर विभिन्न कर्मों यथा- चोरी, झूठ, मृग -िकार, धुम्रपान आदि के परिणामों को बहुत मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है। इसी के साथ स्वप्न विज्ञान, ज्योतिश :ास्त्र, :ाकुन :ास्त्र, बुद्धि परीक्षा आदि के भी अद्‌भुत चित्र यहां उपलब्ध है।

चित्रकला की विभिन्न विधाओं में इस कला दीर्घा में पेंसिल से निर्मित चित्र आने वाले हर द-र्ाक का मन मोह लेते हैं। इन चित्रों में विभिन्न महापुरूशों के चित्रों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि ये चित्र स्वयं अपनी कहानी कह रहे हैं। इसी के साथ उदयपुर का जल मन्दिर, जीवों जीवस्य जीवनम्, नीति-अनीति, करणीय-अकरणीय आदि से संबन्धित चित्रों को देखकर द-र्ाक दांतों तले अंगुली दबा लेते है। तेरापंथ सम्प्रदाय के साधु साध्वियों द्वारा निर्मित आकर्शक चित्र, चित्रकला

के क्षेत्र में अपना वि-िश्ट स्थान रखते हैं। चित्रों के साथ साथ अनेक चित्रमय काव्य भी इस कला दीर्घा में मौजूद है। चित्रकला के क्षेत्र में मुनि श्री सोहनलालजी एवं मुनि श्री चांदमलजी की कृतियां वि-िश्ट हैं।

तुलसी कला प्रेक्षा में हस्तकला की विभिन्न विधाओं का संगम द-र्ाकों को देखने को मिलता है। हाथ से निर्मित इन कलाकृतियों में पेपर कटिंग, पीपल के पत्तों पर कारीगरी, सूत की गुंथाई, सिलाई कला आदि को देखकर आंखों पर यकीन नहीं होता है। इन कलाकृतियों को देखकर विस्मय होता है कि साधु-साध्वियों के द्वारा भी ऐसी कला का संपादन किया जा सकता हैं।

कला दीर्घा में कैंची द्वारा पेपर कटिंग की बनी कलाकृतियां बरबस ही अपनी ओर द-र्ाकों का ध्यान आकर्शित कर लेती है। इन कृतियों में वटवृक्ष का चित्र, प-ु-पक्षी, फुल लतायें, बोध वाक्य, व्यक्तियों के नाम आदि प्रमुख हैं जो कागज की कटिंग से बनाये गये हैं। इस कला विधा में महावीर का जीवन द-र्ान द-र्ाने वाली कृति अति आकर्शक है।

हस्तकला में पीपल के पत्तों पर निर्मित कृतियां, कलाकार के कला कौ-ाल का परिचय करवाती है। वर्शों पूर्व पीपल के पत्तों पर बनाये गये ॐ, अर्हम्, नवकार मन्त्र, ग्रामीण बाला आदि के चित्र आज भी उतने ही आकर्शक और अद्भुत लगते हैं। इन कृतियों में कलाकार की कला सहज रूप से ही द-र्ाकों का ध्यान अपनी ओर आकर्शित कर लेती है।

तेरापंथ सम्प्रदाय में हस्तकला के क्षेत्र में साधु साध्वियों द्वारा की गयी सिलाई कला वि-ोश उल्लेखनीय है। म-ीनी उपकरणों के बिना की जाने वाली साधु साध्वियों की सिलाई कला को देखकर आंखों पर यकीन नहीं होता हैं। केवल सुई की सहायता से निर्मित वस्त्र, रजोहरण, प्रमार्जनी, पछेवड़ी, चोलपट्टा, मुखवस्त्रिका कवच, पुस्तक कवच आदि की सफाई और बारीकी बेजोड़ है। सूत की गुंथाई कला से निर्मित माला एवं अन्य वस्तुयें भी अनूठी है।

पांडुलिपियों के विकास एवम् संरक्षण की दृश्टि से भी जैन धर्म के साधु साध्वियों का योगदान वि-ोश रूप से उल्लेखनीय है। तेरापंथ सम्प्रदाय के साधु-साध्वियों की प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपियों का यहां अद्भुत संग्रह है। लेखन कला की दृश्टि से सूक्ष्माक्षर लेखन की कृतियां आ-चर्यजनक है। साधु साध्वियों द्वारा अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का लेखन अत्यन्त सूक्ष्म अक्षरों में किया गया है। भगवत् गीता और उत्तराध्ययन की अत्यन्त सूक्ष्म कला देखकर अपार विस्मय होता है। उर्दू भाशा में कुरान भी काफी सूक्ष्म अक्षरों में लिखी गयी है। प्राचीन पांडुलिपियों में 18 वीं :ताब्दी के ताड़पत्र पर कन्नड़ व उड़िया भाशा में लिखी गयी भगवत् गीता, कृश्ण गोपी लीला एवम्

अन्य सचित्र हस्तलेख वि-ोश आकर्शण का केन्द्र है। साधुओं द्वारा लिखित हस्तलेखों में मुनि ि-वराजजी का उत्तराध्ययन, मुनि दुलीचन्द (दिनकर) द्वारा लिखित संस्कृत :लोक, मुनि सुमेरमल 'सुद-र्न' का :ांत सुधारस आदि प्रमुख है। इनके अतिरिक्त तुलसी कला दीर्घा में प्लास्टिक, चंदन, लकड़ी आदि पर लिखे हस्तलेख सुरक्षित है।

तुलसी कला दीर्घा में जहां एक ओर जैन धर्म की समृद्ध कला और संस्कृति को द-र्ाने वाली अद्भुत कलाकृतियां संरक्षित है वही दूसरी ओर इस केन्द्र में तेरापंथ सम्प्रदाय की अनेक धरोहरें भी सुरक्षित हैं। इन धरोहरों में आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ को प्रदत्त विभिन्न राश्ट्रीय अन्तर्राश्ट्रीय सम्मनों के अभिनन्दन पत्र और प्रतीक चिन्ह प्रमुख है। आचार्य तुलसी को प्राप्त भारत ज्योति सम्मान, इंदिरा गांधी राश्ट्रीय एकीकरण पुरस्कार, हकीम खां सूर सम्मान आदि के प्रतीक चिन्ह यहां सुरक्षित है। इसी के साथ आचार्य तुलसी को विभिन्न धर्मगुरूओं द्वारा प्रदत्त उपहारों को भी कला दीर्घा में सहेज कर रखा गया है जिनमें दिगम्बर आचार्य विद्यानन्दजी, बोहरा समाज के गुरू सैयद मोहम्मद, आर्ट ऑफ लिविंग (श्री श्रीरवि-ांकर) द्वारा प्रदत्त स्वर्ण व रजत की वस्तुयें प्रमुख है। इसी क्रम में आचार्य महाप्रज्ञ को प्राप्त विभिन्न सम्मान यथा - मैन ऑफ द ईयर, राश्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भाव पुरस्कार आदि के अभिनन्दन पत्र एवं प्रतीक चिन्ह उपलब्ध है। तेरापन्थ सम्प्रदाय के साधु साध्वियों द्वारा अपने आचार्य को भेंट की गयी अभिन्न कलात्मक वस्तुयें भी यहां सुरक्षित एवं संरक्षित है।

यह कहने में कोई अति-योक्ति नहीं होगी कि लाडनूं जैसे छोटे कस्बे में स्थित यह तुलसी कला प्रेक्षा संस्कृति एवं कला के क्षेत्र में 'गागर में सागर' की कहावत को :ाब्द-ाः चरितार्थ करती है। कला मर्मज्ञों एवं कला प्रेमियों की दृश्टि से भी यह स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। तेरापंथ धर्मसंघ की इस अमूल्य धरोहर को संरक्षित कर **''जैन विश्व भारती''** नामक संस्था जैन कला और संस्कृति के विकास एवं संरक्षण में अपना अमूल्य योगदान दे रही है।

!!इति!!

वंदना कुण्डलिया

कनिष्ठ शोध अध्येता
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय,
लाडनूं